नोह और भयंकर बाढ़

बाइबिल से, परमेश्वर के वाणी में कहानी

में पाया गया

जेनेसिस 6-10

"जो आपके जीवन में प्रकाश देता है।"
प्लाज्म 119:130

लेखक Edward Hughes
व्याख्याकार Byron Unger; Lazarus
अनुवाद info@christian-translation.com
रूपान्तरकार M. Maillot; Tammy S.

60 कहानियों में से 3 (पहला)

M1914.org

Bible for Children, PO Box 3, Winnipeg MB R3C 2G1 Canada

अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): आप इन कहानियों की छाया प्रति और मुद्रण करवा सकते हैं, बशर्ते कि बेचें नहीं।

ईश्वर (परमेश्वर) जानता है कि हमने ऐसे गुनाह किए हैं जिन्हें वह पाप कहता है. पाप की सज़ा मौत है.

ईश्वर (परमेश्वर) हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र यीशु को भेजा कि हमारे पापों की सज़ा के रूप में वह टिकटी (क्रॉस) पर चढ़ कर अपने प्राणों की बलि दे दे. यीशु मरकर फिर जीवित हुआ और पुन: स्वर्ग चला गया. ईश्वर (परमेश्वर) अब हमारे पापों को क्षमा कर सकता है.

यदि आप अपने गुनाहों और पापों से बचना चाहते हैं तो उससे दुआ करें; प्रिय ईश्वर (परमेश्वर) मुझे विश्वास है कि यीशु ने मेरे लिए अपने जीवन की बलि दी और अब पुन: जीवित हुआ है. हे ईश्वर (परमेश्वर) तू मेरी ज़िंदगी में आ और मेरे पापों को माफ़ कर दे ताकि मैं एक नई ज़िंदगी जी सकूं और हमेशा हमेशा के लिए तेरे साथ रह सकूं. हे ईश्वर (परमेश्वर) मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी संतान के रूप में तेरे लिए जी सकूं.
आमीन. जॉन 3:16

बाइबल पढ़ें और प्रतिदिन ईश्वर (परमेश्वर) से बात करें.

हिन्दी Hindi

परमेश्वर ने नोह को चेतावनी दी कि बहुत ही भयंकर बाढ़ आएगी और पूरे पृथ्वी पर छा जाएगी। “तुम अपने परिवार तथा पशुओं के लिए लकड़ी का एक सन्दूक और एक बड़ा-सा नाव बनाओ।”
3
नोह को आदेश दिया जा चुका था। परमेश्वर ने नोह को खास निर्देश दिया। नोह व्यस्त हो गया।
4
वह सन्दूक क्यों बना रहा है, जब नोह ऐसा कहता तो लोग प्रायः उसका उपहास करते। नोह ने निर्माण जारी रखा।
5
वह लोगों को परमेश्वर के संबंध में कहना भी जारी रखा। उसकी कोई नहीं सुनता था।
6
नोह को अटूट विश्वास था। वह परमेश्वर पर विश्वास करता था, यहाँ तक की इससे पहले कभी भी वर्षा भी नहीं हुई थी। सन्दूक सामान लादने के लायक हो चुका था।
7
अब जानवर आए। परमेश्वर ने उनमें से सात प्रजातियाँ और अन्य से दो को लिया।
8
छोटी और बड़ी पक्षियाँ, छोटे और लम्बे जानवरों को सन्दूक में रखा गया।
9
जानवरों को लादते समय नोह को कदाचित लोगों ने अपमानित किया। वे लोग परमेश्वर के विरूद्ध पाप करने से नहीं चूके।
10
उनलोगों को सन्दूक में प्रवेश करने को नहीं कहा गया।
11
अंततः सभी पशु और पक्षी लाद लिए गए। “सन्दूक में आ जाओ”, परमेश्वर ने नोह को आमंत्रित किया। “तुम और तुम्हारा परिवार।”
12
नोह, उनके तीनों बेटे तथा उनकी पत्नियाँ सन्दूक में प्रवेश कर गए। और तब परमेश्वर ने दरवाजा बन्द कर दिया।
13
तब वर्षा आरंभ हुई। चालीस दिनों तक दिन और रात मूसलाधार बारिस होती रही।
14
गाँव और शहरों के ऊपर से बाढ़ का पानी बहने लगा। जब बारिश रूकी तो यहाँ तक की पहाड़ भी पानी में डूब चुका था। हवा साँस लेने वाला प्रत्येक प्राणी मर चुका था।
15
जैसे-जैसे पानी बढता, सन्दूक ऊपर तैरता। अंदर अँधेरा, ऊबड़-खाबड़, और डरावना हो सकता था, पर सन्दूक नोह को बाढ़ से पनाह देता रहा।
16
पाँच महीने के बाढ़ के बाद, परमेश्वर ने सूखी हवा भेजी। धीरे-धीरे सन्दूक आरारत पहाड़ पर पहुँच गया। जबतक पानी नीचे नहीं चला गया नोह वहीं पर चालीस दिनों तक ठहरा रहा।
17
नोह ने सन्दूक खोलकर एक कौआ और एक बतख को भेजा। कहीं भी उसे सूखा और साफ जगह नहीं मिला, इसलिए बतख नोह के पास वापस आ गया।
18